

अथ सप्तदशः पटलः

नीलपताकानित्याविद्याविधान

अथ षोडशानित्यासु द्वादशी या समीरिता ।
तस्या नीलपताकाया विधानं सर्वसिद्धिदम् ॥ १ ॥
न्यासक्रमविधानं च ध्यानं शक्तीः प्रपूजनम् ।
साधनं सिद्धविद्यस्य विजयं कामरूपताम् ॥ २ ॥
पादुकामङ्गलं खड्गं वेतालांश्च पिशाचकान् ।
यक्षिणीश्चेटकान्मायां यन्त्राणि च वदामि ते ॥ ३ ॥
प्रयोगानानुपूर्व्येण सन्दिष्टानामशेषतः ।
दशभिः सिद्धिभिर्पत्यो भवेद्विद्याधरोऽपरः ॥ ४ ॥

नीलपताका विधान—१-४ तक के चार श्लोकों में बारहवीं नित्या नीलपताका का विधान वर्णित है । सोलह नित्याओं में बारहवीं नित्या नीलपताका है, उनकी पूजा विधिवत् करने से सभी सिद्धियाँ साधक के हस्तगत हो जाती हैं ॥ १ ॥

इसके न्यासक्रम-विधान, ध्यान, शक्ति, पूजन तथा सिद्धविद्या का साधन करने से विजय के साथ-साथ कामरूपता भी प्राप्त होती है ॥ २ ॥

इसके साधन करने से खड्ग, अङ्ग, खड्ग, वेताल, पिशाच, यक्षिणी, चेटक तथा माया की सिद्धि होती है । अब इसके पूजन यन्त्र का वर्णन करता हूँ ॥ ३ ॥

ऊपर वर्णित दशों प्रकार की सिद्धियाँ अर्चन-साधना से प्राप्त करके साधक विद्याधर के समान हो जाता है ॥ ४ ॥

मूलविद्याक्षरैरङ्गान्याचरेत् षडितिक्रमात् ।
द्विचतुष्टयषड्वर्णः क्रमेण षड्वितीरितैः ॥ ५ ॥
श्रोत्राक्षिनासायुगले वाचि कण्ठे हृदि क्रमात् ।
नाभावाधारके पादसन्धिषु त्रिषु च क्रमात् ॥ ६ ॥
मन्त्राक्षराणि क्रमशो न्यसेत्सप्तदशापि वा ।
व्यापकं च समस्तेन विदध्याच्च यथाविधि ॥ ७ ॥

न्यास क्रम—५-७ तक के तीन श्लोकों में न्यासक्रम का वर्णन है । सप्तदशाक्षरी मूलविद्या—‘ह्रीं फ्रं नूं ओं आं क्लीं ऐं वूं नित्य मदद्रवे हुं फ्रं ह्रीं’ इन १७ अक्षरों को छः विभाग करके उनसे करन्यास एवं अङ्गन्यास करे । छः भाग करने का क्रम दो-चार-छः-एक-एक-एक वर्ण होगा । यथा—ह्रीं फ्रं, नूं ओं आं क्लीं, ऐं वूं नित्यमद, द्र, वे, हुं ।

कान दो, आँख दो, नासिका छिद्र दो, जीभ एक, कण्ठ एक, नाभि एक, लिङ्ग-मूल एक, गुह्य एक, दायीं पादसन्धि तीन, बायीं पादसन्धि तीन = कुल १७ स्थानों में १७ मन्त्राक्षरों से न्यास करे । कुल १७ अक्षरों से व्यापक न्यास करे । इसके अनुसार न्यास निम्नलिखित होगा—पूर्ववत् योगपीठन्यास करके नीलपताका के सत्रह-अक्षरी मन्त्र से तीन प्राणायाम करके विनियोग के लिए न्यास करे । यथा—

१. शिर में सम्मोहनाय ऋषये नमः ।
२. मुख में गायत्रीछन्दसे नमः ।
३. हृदय में नीलपताकादेवतायै नमः ।
४. गुह्य में ह्रीं बीजाय नमः ।
५. पावों में ह्रीं शक्तये नमः ।
६. नाभि में क्लीं कीलकाय नमः ।

ममाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः । अञ्जलि बनाकर न्यास करे ।

करन्यास—

१. ह्रीं फ्रें अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
२. स्त्रूं ओं आं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
३. ऐं ब्लूं नित्यमद मध्यमाभ्यां नमः ।
४. द्र अनामिकाभ्यां नमः ।
५. वे कनिष्ठाभ्यां नमः ।
६. हुं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास—

१. ह्रीं फ्रें हृदयाय नमः ।
२. स्त्रूं ओं आं क्लीं शिरसे स्वाहा ।
३. ऐं ब्लूं नित्यमद शिखायै वषट् ।
४. द्र कवचाय हुं ।
५. वे नेत्रत्रयाय वौषट् ।
६. हुं अस्त्राय फट् ।

अङ्गन्यास मन्त्राक्षरों से—

१. दक्ष कर्ण में ह्रीं नमः ।
२. वाम कर्ण में फ्रें नमः ।
३. दक्ष नेत्र में स्त्रूं नमः ।
४. वाम नेत्र में ओं नमः ।
५. दक्ष नासा आं नमः ।
६. वाम नासा क्लीं नमः ।
७. मुख में ऐं नमः ।

८. कण्ठ में ब्लूं नमः ।
९. हृदय में निं नमः ।
१०. नाभि में त्यं नमः ।
११. मूलाधार में मं नमः ।
१२. दक्ष जङ्घामूल में दं नमः ।
१३. घुटने में द्रं नमः ।
१४. गुल्फ में वें नमः ।
१५. वाम जङ्घामूल में हुं नमः ।
१६. वाम घुटने में फ्रें नमः ।
१७. गुल्फ सन्धि में ह्रीं नमः ।

मूलमन्त्र से व्यापक न्यास करे ॥ ५-७ ॥

इन्द्रनीलनिभां भास्वन्मणिमौलिविराजिताम् ।
 पञ्चवक्त्रां त्रिनयनामरुणांशुकधारिणीम् ॥ ८ ॥
 दशहस्तां लसन्मुक्ताप्रायाभरणमण्डिताम् ।
 रत्नस्तबकसम्भिन्नदेहां चारुस्मिताननाम् ॥ ९ ॥
 पाशं पताकां चर्माणि शार्ङ्गचापं वरं करैः ।
 दधानां वामपार्श्वस्थैः सर्वाभरणभूषितैः ॥ १० ॥
 अङ्कुशं च ततः शक्तिं खड्गं बाणं तथाऽभयम् ।
 दधानां दक्षिणैर्हस्तैरासीनां पद्मविष्टरे ॥ ११ ॥
 स्वाकारवर्णविषास्यपाण्यायुधविभूषणैः ।
 शक्तिवृन्दैर्वृतां ध्यायेद्देवीं नित्यार्चनक्रमे ॥ १२ ॥

ध्यान—८-१२ तक के पाँच श्लोकों में नीलपताका नित्या और उनकी शक्तियों की नित्य सपर्या एवं ध्यान वर्णित है । भगवती नीलपताका का वर्ण इन्द्रनील के समान है । मणियों का मुकुट है । चारो दिशाओं में चार मुख और इनके ऊपर एक मुख है, इस प्रकार कुल पाँच मुख हैं । पाँचों मुखों में तीन-तीन आँखें हैं । लाल रेशमी वस्त्र है ॥ ८ ॥

इनके दश हाथ हैं । मोतीजटित आभूषण है । रत्नस्तबक से युक्त देह है । सुन्दर मुख मुस्कानयुक्त है ॥ ९ ॥

सोने के गहनों से शोभायमान पाँच वाम हाथों में पाश, पताका, ढाल, शार्ङ्ग (धनुष) और वरमुद्रा है ॥ १० ॥

उसी प्रकार आभूषणों से शोभित दाहिने पाँच हाथों में अङ्कुश, शक्ति, खड्ग, बाण और अभय मुद्रा है । देवी कमल के आसन पर विराजमान हैं ॥ ११ ॥

उन्हीं के समान आकार और वर्ण की शक्तियाँ उन्हें सब ओर से घेरे हुए हैं । नित्य अर्चन क्रम में इन सब का भी ध्यान किया जाता है ॥ १२ ॥

त्रिषट्कोणयुतं पद्ममष्टपत्रं ततो बहिः ।
 अष्टास्रं भूपुरद्वन्द्वाद्भुते तत्पुरयुग्मकम् ॥ १३ ॥
 चतुर्द्वारयुतं दिक्षु शाखाभिश्च समन्वितम् ।
 कृत्वा तामावृतां शक्तिगणैस्तत्रार्चयेच्छिवाम् ॥ १४ ॥

नित्य सपर्या-मण्डल—१३-१४ दो श्लोकों में पूजा-मण्डल और पूजा-विधान का वर्णन है । चार द्वारयुक्त दो चतुरस्र के अन्दर दो वृत्त, अष्टार, अष्टदल कमल, षट्कोण और मध्य में त्रिकोण बनाकर चक्र का निर्माण होता है । इन्हीं में इनकी शक्तियों सहित इनकी पूजा होती है ॥ १३-१४ ॥

इच्छाज्ञानक्रियाशक्तीस्त्रिषु कोणेषु पूजयेत् ।
 अग्रात्प्रदक्षिणेनैव यजेदावृत्तिपञ्चकम् ॥ १५ ॥
 डाकिन्यादीर्यजेत्षट्सु कोणेषु परितः क्रमात् ।
 ब्राह्म्यादीरष्टपत्रेषु तत्कोणेषु बहिस्तथा ॥ १६ ॥
 प्रागुक्तास्ता यजेच्छक्तीः नित्यानित्यादिषूदिताः ।
 बलिद्वयं च कुर्वीत पूजां प्राग्वत्समापयेत् ॥ १७ ॥

पञ्चावरण अर्चन क्रम—त्रिकोण के मध्य में भगवती नीलपताका की, तीनों कोणों में इच्छा, ज्ञान एवं क्रियाशक्ति की पूजा आगे से प्रदक्षिण क्रम से होती है । षट्कोणों में डाकिनी, राकिनी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, हाकिनी की पूजा भी अग्रकोण से प्रारम्भ करके प्रदक्षिण क्रम से होती है । अष्टदल में ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा और महालक्ष्मी—नामक अष्टमातृकाओं की पूजा होती है । अष्टकोण में सुमुखी, सुन्दरी, सारा, सुमना, सरस्वती, समया, सर्वांगा और सिद्धा—इन आठ शक्तियों की पूजा होती है । चतुरस्र में देवी के अग्र द्वार के दक्षिण भाग से प्रारम्भ करके प्रदक्षिण क्रम से विह्वला, आकर्षिणी, लोला, नित्या, मदना, मालिनी, विनोदा, कौतुका, पुण्या तथा पुराणा—इन दश शक्तियों की पूजा होती है । चतुरस्र के बाहर चारो द्वार-पार्श्वों में दो-दो के क्रम से आठ लोकपालों की शक्तियों की पूजा होती है । चार कोणों में ब्रह्मा, अनन्त, नियति और कालशक्ति की पूजा होती है । पूजा के प्रारम्भ और अन्त में कुरुकुल्ला की बलि देकर पूर्ववत् पूजा समाप्त करनी चाहिए । अन्न और गोघृत से नित्य हवन करना चाहिए ॥ १५-१७ ॥

उपर्युक्त पूजा-विधान के अनुसार पूजन निम्न प्रकार से किया जायगा ।

ध्यान—इस पटल के श्लोक ८-१२ का ध्यान करके मानस पूजन करे ।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । अधोमुख कनिष्ठाङ्गुष्ठ ।
२. हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । अधोमुख तर्जनी-अङ्गुष्ठ ।
३. यं वाय्वात्मकं धूपम् आग्रापयामि । ऊर्ध्वमुख तर्जनी-अङ्गुष्ठ ।
४. रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि । अङ्गुष्ठ-मध्यमा से ।
५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि । अङ्गुष्ठ-अनामिका से ।

६. सं सर्वात्मकं ताम्बूलादि सर्वोपचारान् समर्पयामि । सभी अङ्गुलियों से ।

मानसिक पूजनोपरान्त पूर्ववत् स्वर्णादि पट्ट पर अष्टगन्ध से पूजाचक्र बनाकर अपने सामने या पीछे चौकी स्थापित करके अर्घ्यादि-स्थापना एवं आत्मपूजा के साथ पीठ का अर्चन करे—मण्डूकादि परतत्त्वान्त देवताभ्यो नमः । चक्र में मध्य के बिन्दु में नीलपताका के मन्त्र से मूर्ति कल्पित करके आवाहनादि पुष्पोपचार तक पूजन करे । यथा—

१. नीलपताकां ध्यायामि आवाहयामि ।
२. नीलपताकायै नमः आसनं समर्पयामि ।
३. नीलपताकायै नमः पाद्यं समर्पयामि ।
४. नीलपताकायै नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।
५. नीलपताकायै नमः आचमनीयं समर्पयामि ।
६. नीलपताकायै नमः स्नानं समर्पयामि ।
७. नीलपताकायै नमः वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि ।
८. नीलपताकायै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।
९. नीलपताकायै नमः गन्धान् धारयामि ।
१०. नीलपताकायै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

त्रिकोण में षडङ्ग पूजन करे (अग्नि, ईशान, नैऋत्य एवं वायु कोण में, मध्य में और चारो दिशाओं में) यथा—

१. ह्रीं श्रीं ह्रीं फ्रें हृदयाय नमः हृदयशक्ति पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं स्तूं ओं आं क्लीं शिरसे स्वाहा शिरशक्ति पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं ऐं ब्लूं नित्यमद शिखायै वषट् शिखाशक्ति पादुकां पूजयामि ।
४. ह्रीं श्रीं द्र कवचाय हूं कवचशक्ति पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं वे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं हुं अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति पादुकां पूजयामि ।

त्रिकोण एवं षट्कोण के अन्तराल में गुरुमण्डलार्चन करे—ह्रीं श्रीं परौघेभ्यो नमः । पुष्पाञ्जलि प्रदान करे ।

ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं भूर्भुवौ ह स क्ष म ल व र यू ह्रस्वौः स ह क्ष म ल व र यीं स्तौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथ श्रीमहापादुकां पूजयामि ।

त्रिकोण के पूर्व दिशा की ऊपर वाली रेखा में तत्पश्चात् दोनों रेखाओं में १२ गुरुओं की पूजा करे । उड्डीशानन्दनाथ आदि द्वादशगुरुभ्यो नमः । दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः ।

त्रिकोण-षट्कोण के अन्तराल में—

१. ह्रीं श्रीं अभयाय नमः अभयाशक्ति पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं बाणाय नमः बाणशक्ति पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं खड्गाय नमः खड्गशक्ति पादुकां पूजयामि ।

४. ह्रीं श्रीं शक्तये नमः शक्तिशक्ति पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशक्ति पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं पाशाय नमः पाशशक्ति पादुकां पूजयामि ।
७. ह्रीं श्रीं पताकायै नमः पताकाशक्ति पादुकां पूजयामि ।
८. ह्रीं श्रीं चर्मणे नमः चर्मशक्ति पादुकां पूजयामि ।
९. ह्रीं श्रीं शार्ङ्गचापाय नमः चापशक्ति पादुकां पूजयामि ।
१०. ह्रीं श्रीं वराय नमः वरशक्ति पादुकां पूजयामि ।

त्रिकोण में—देवी के सम्मुख अग्रकोण से प्रदक्षिण क्रम से—

१. ह्रीं श्रीं इच्छाशक्ति पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं ज्ञानशक्ति पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं क्रियाशक्ति पादुकां पूजयामि ।

आवरण पूजन—

संविन्मये परे देवी परामृतरुचिप्रिये ।

अनुज्ञां भगवती देहि परिवारार्चनाय मे ॥ पुष्पाञ्जलि दें ।

प्रथमावरण षट्कोणों में अग्रकोण से प्रदक्षिण क्रम—

१. ह्रीं श्रीं हाकिनी पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं शाकिनी पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं काकिनी पादुकां पूजयामि ।
४. ह्रीं श्रीं लाकिनी पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं राकिनी पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं डाकिनी पादुकां पूजयामि ।

तर्पण । अभीष्ट प्रथमावरणार्चनम् । योनिमुद्रा से प्रणाम करे ।

द्वितीय आवरण अष्टदल कमल में पूर्वोक्त क्रम से—

१. ह्रीं श्रीं ब्राह्मी पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं माहेश्वरी पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं कौमारी पादुकां पूजयामि ।
४. ह्रीं श्रीं वैष्णवी पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं वाराही पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं ऐन्द्री पादुकां पूजयामि ।
७. ह्रीं श्रीं चामुण्डा पादुकां पूजयामि ।
८. ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी पादुकां पूजयामि ।

तर्पण । अभीष्ट... द्वितीयावरणार्चनम् । योनिमुद्रा से प्रणाम करे ।

तृतीय आवरण अष्टकोण में पूर्वोक्त क्रम से—

१. ह्रीं श्रीं सुमुखी पादुकां पूजयामि ।

२. ह्रीं श्रीं सुन्दरी पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं सारा पादुकां पूजयामि ।
४. ह्रीं श्रीं सुमना पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं सरस्वती पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं समया पादुकां पूजयामि ।
७. ह्रीं श्रीं सर्वगा पादुकां पूजयामि ।
८. ह्रीं श्रीं सिद्धा पादुकां पूजयामि ।

तर्पण । अभीष्ट ... तृतीयावरणार्चनम् । योनिमुद्रा से प्रणाम करे ।

चतुर्थ आवरण चतुरस्र के अन्दर अग्रद्वार से—

१. ह्रीं श्रीं विह्वला पादुकां पूजयामि ।
२. ह्रीं श्रीं आकर्षिणी पादुकां पूजयामि ।
३. ह्रीं श्रीं लोला पादुकां पूजयामि ।
४. ह्रीं श्रीं नित्या पादुकां पूजयामि ।
५. ह्रीं श्रीं मदना पादुकां पूजयामि ।
६. ह्रीं श्रीं मालिनी पादुकां पूजयामि ।
७. ह्रीं श्रीं विनोदा पादुकां पूजयामि ।
८. ह्रीं श्रीं कौतुका पादुकां पूजयामि ।
९. ह्रीं श्रीं पुण्या पादुकां पूजयामि ।
१०. ह्रीं श्रीं पुराणा पादुकां पूजयामि ।

तर्पण । अभीष्ट ... चतुर्थावरणार्चनम् । योनिमुद्रा से प्रणाम करे ।

पञ्चम आवरण भूपुर के बाहर—

देवी के सामने वाले द्वार के दक्षिण पार्श्व से प्रारम्भ करके—

१. पूर्व द्वार में — ह्रीं श्रीं इन्द्रशक्ति पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं श्रीं अग्निशक्ति पादुकां पूजयामि ।
२. दक्षिण द्वार में — ह्रीं श्रीं यमशक्ति पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं श्रीं नैऋतिशक्ति पादुकां पूजयामि ।
३. पश्चिम द्वार में — ह्रीं श्रीं वरुणशक्ति पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं श्रीं वायुशक्ति पादुकां पूजयामि ।
४. उत्तर द्वार में — ह्रीं श्रीं कुबेरशक्ति पादुकां पूजयामि ।
ह्रीं श्रीं ईशानशक्ति पादुकां पूजयामि ।
५. अग्निकोण में — ह्रीं श्रीं ब्रह्माशक्ति पादुकां पूजयामि ।
६. नैऋत्यकोण में — ह्रीं श्रीं अनन्तशक्ति पादुकां पूजयामि ।
७. वायव्यकोण में — ह्रीं श्रीं नियतिशक्ति पादुकां पूजयामि ।
८. ईशानकोण में — ह्रीं श्रीं कालशक्ति पादुकां पूजयामि ।

तर्पण । अभीष्ट ... पञ्चावावरणाचर्नम् । योनि मुद्रा से प्रणाम करे ।

ह्रीं श्रीं आवरणशक्ति सहितायै नीलपताकायै नमः धूपं आघ्रापयामि ।

ह्रीं श्रीं आवरणशक्ति सहितायै नीलपताकायै नमः दीपं दर्शयामि ।

ह्रीं श्रीं आवरणशक्ति सहितायै नीलपताकायै नमः नैवेद्यं निवेदयामि ।

ह्रीं श्रीं आवरणशक्ति सहितायै नीलपताकायै नमः । मध्ये-मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं च समर्पयामि । कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि ।

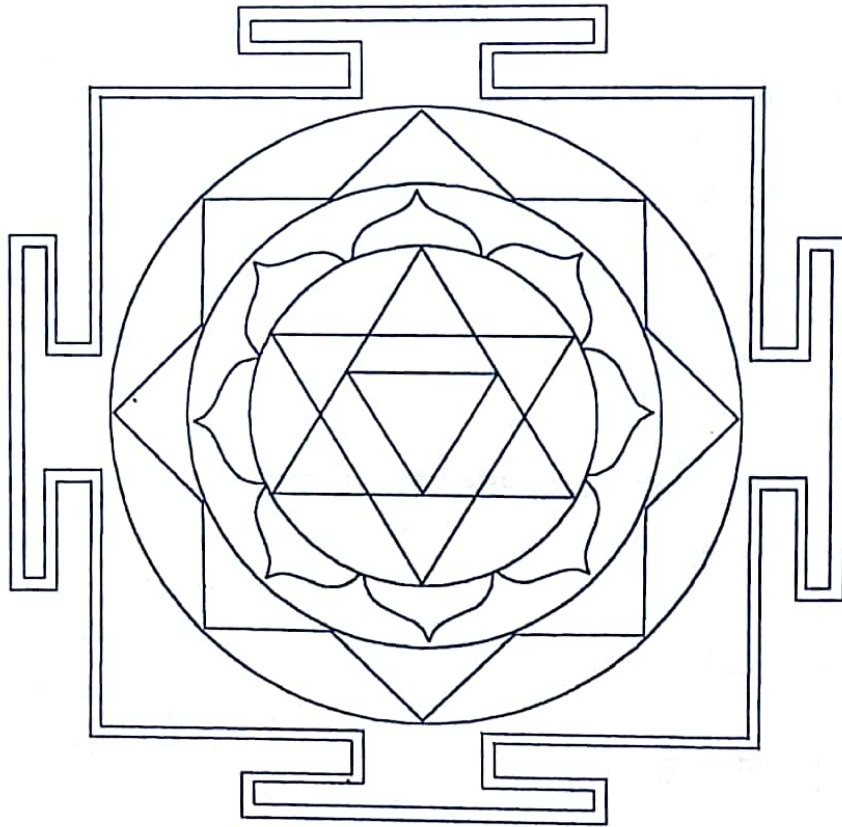
ह्रीं श्रीं नीलपताकायै नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

ह्रीं श्रीं नीलपताकायै नमः प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि ।

ह्रीं श्रीं नीलपताकायै नमः समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि ।

अनया पूजया भगवती नीलपताका सुप्रीता सुप्रसन्ना भवतु ।

पूजन चक्र



सर्वत्र नित्यहोमं(च) तु कुर्यादन्नाज्यतोऽपि वा ।

तिलतण्डुलकैर्वापि प्रोक्तं द्रव्यानुदीरणे ॥ १८ ॥

सामान्य हवन-सामग्री—१८वें श्लोक में सामान्य हवन का वर्णन है । सामान्य हवन सामग्री में तिल, चावल, जौ, गुड़ एवं गाय का घी आता है । नित्य हवन इन्हीं से निश्चित मात्रा के अनुसार करना चाहिये—तिलार्द्ध तण्डुल, तण्डुलार्द्ध जव, जवार्द्ध शक्कर और शक्करार्द्ध घृत या और का प्रोक्तक्रम से हवन करे ॥ १८ ॥

विद्याक्षराणां सर्वेषां स्वरव्यञ्जनबिन्दुकान् ।
 पृथक्कृ(त्वा)त्वाऽथ गुणिते त्रिपञ्चाशद्वदन्ति हि ॥ १९ ॥
 तेन तल्लक्षसङ्ख्यन्तु जपेद्विद्यां पयोव्रतः ।
 तद्दशांशं हुनेदग्नौ सर्वत्राक्षरलक्षके ॥ २० ॥
 प्राङ्मुखो नित्यपूजासु साधनेषु च साधकः ।
 नित्यानामपि सर्वासां वासनायामुदीरितम् ॥ २१ ॥

विद्यासाधन प्रकार—१९-२१ तक के श्लोकों में विद्या-साधना का वर्णन है ।
 कुल १७ विद्याक्षरों को स्वर-व्यञ्जन बिन्दु से पृथक् करने पर ५३ अक्षर होते हैं ॥ १९ ॥

वर्णलक्ष जप के अनुसार इस मन्त्र का जप ५३ लाख होता है । केवल दूध के
 आहार पर रहकर जप करना है । उसका दशांश ५ लाख ३० हजार हवन, इसका दशांश
 ५३००० तर्पण, इसका दशांश ५३०० मार्जन और इसका दशांश ५३० ब्राह्मण-भोजन
 से मन्त्र सिद्ध होता है । पूर्व की ओर मुख करके पूजा एवं जप करना चाहिये । सभी
 नित्याओं की साधना में यही बतलाया गया है ॥ २०-२१ ॥

ततः सिद्धमनुर्मन्त्री कुर्यात् सिद्धिषु कौतुकम् ।
 तद्विधानं शृणु प्राज्ञे! वक्ष्ये विद्याविभेदतः ॥ २२ ॥
 दशानामपि सिद्धीनां विद्यास्तासां भिदागताम् ।
 सङ्ख्याञ्च ताश्च सम्प्रोक्ताः क्रमेणासां फलानि च ॥ २३ ॥

सिद्धविद्या का प्रयोग—२२-२३ के दो श्लोकों में सिद्धविद्या के प्रयोग से दश
 सिद्धियों की प्राप्ति का वर्णन है । हे प्राज्ञे ! सुनिये । उस सिद्धमन्त्र से साधक कौतुक-
 स्वरूप १० सिद्धियाँ प्राप्त करता है । अब उन दश के विधान का विद्याभेद के आधार पर
 वर्णन किया जाता है ॥ २२ ॥

इन दशों सिद्धियों के मन्त्र, मूल विद्याक्षरों का प्रोक्त विधि से योजन करने पर बनते
 हैं । उन सबों का वर्णन फल सहित क्रमशः किया जाता है ॥ २३ ॥

विद्यादिकूटे त्वाद्ये तु योजयेद्दशसु क्रमात् ।
 ताभ्यामेव विलोमाभ्यां पुटयेदुपरीरितान् ॥ २४ ॥
 मन्त्रवर्णान् दशानां च तत्तत्सङ्ख्याश्च ताः शृणु ।
 परस्तात्तत्प्रभेदानां मन्त्रान् वक्ष्ये यथाविधि ॥ २५ ॥

विद्या कूटाक्षर पटल—२४-२५ के दो श्लोकों में स्वरूपयोजन असाधारण
 कूटाक्षर पटल का वर्णन है । विद्या के प्रारम्भिक कूट के साथ दशों कूटों को क्रमशः जोड़ने
 पर तथा उनमें विलोमक्रम से भी सम्पुट लगाने से दशों सिद्धियों के मन्त्रवर्ण बनते हैं ।
 अब उनकी सङ्ख्या को तथा उनके प्रभेदों को भी यथाविधि सुनिये ॥ २४-२५ ॥

चतुर्विधः स्याद्विजयो द्वन्द्वे सचतुरङ्गके ।
 कूटयुद्धे दुर्गजे च तेषां मन्त्राश्चतुर्विधाः ॥ २६ ॥

कामरूपत्वमुदितं स्वेच्छयाऽभीष्टविग्रहम् ।
 विधातुमात्मनः शक्तिं स एको मन्त्र ईरितः ॥ २७ ॥
 पादुकायुगलं विद्यावैभवाप्तं तु पादयोः ।
 कृत्वा स्मरेद्वाञ्छितं तु देशं तत्र तदा स्थितिः ॥ २८ ॥
 तन्मन्त्रः स्यादेकविधस्तथैवाञ्जनमीरितम् ।
 येनाक्ताक्षोनिधिं पश्येद्देवाद्यांश्चान्तरिक्षगान् ॥ २९ ॥
 खड्गश्च तादृशः प्रोक्तः करस्थे नाहिताः क्षणात् ।
 पलायिता वा पदयोः प्रणमेयुर्वशङ्गताः ॥ ३० ॥
 वेतालाः स्युरसङ्ख्याताः सिद्धान्ते चै(क)व विद्यया ।
 निधाय साधनं स्कन्धे चरेयुर्वाञ्छयाऽस्य ते ॥ ३१ ॥
 विकृताङ्गमुखाः केचित्केचित्तिर्यङ्मुखाङ्गकाः ।
 केचिद्भीषणनाटाङ्गाः वेताला बहुविग्रहाः ॥ ३२ ॥
 सर्वेऽपि वशगा वाक्यादस्य शत्रून् ग्रसन्ति च ।
 किङ्कराः प्रोक्तकरणाद्भवेयुर्याविदायुषम् ॥ ३३ ॥
 पिशाचास्तादृशाः प्रोक्ता काश्यपैरुप्यविग्रहाः ।
 क्रुद्धाः क्षुद्राशयाः प्रोक्तकारिणः स्युरसङ्ख्यकाः ॥ ३४ ॥
 तेषामेका भवेद्विद्या तया ते किङ्कराः सदा ।
 तैरेव प्रहरेच्छत्रुमज्ञातमनिशं रणे ॥ ३५ ॥
 षट्त्रिंशद्रूपसंयुक्ता यक्षिण्यो वाञ्छितप्रदाः ।
 सरूपा द्विभुजाश्चित्रवसनाभरणान्विताः ॥ ३६ ॥
 असहाया यौवनाढ्याः स्रगालेपनसौरभैः ।
 समेत्य सर्वाभीष्टानि दद्युस्ताः साधकाय वै ॥ ३७ ॥
 तासां विद्याश्च षट्त्रिंशद्वक्ष्ये ताश्च शृणु प्रिये !
 याभिः सिद्धाभिरनिशं साधकाः सर्वसम्पत्ताः ॥ ३८ ॥
 चेटकाः स्युश्चतुःषष्टिस्तेषां मन्त्राश्च तत्समाः ।
 तेऽपि नानाविधाकाराः सिद्धास्ते दद्युरीप्सितम् ॥ ३९ ॥
 मायासङ्ख्याश्चित्ररूपाश्चित्राण्यस्येच्छयाऽनिशम् ।
 वसून्पुपहरेयुस्ता विद्यैका तत्प्रसा(ध)दने ॥ ४० ॥

दश सिद्धियाँ—२६-४० तक के १५ श्लोकों में दशों सिद्धियों के रूप, विद्या की सङ्ख्या और उसकी भेद-सङ्ख्या का वर्णन है । २६वें श्लोक में विजयसिद्धि विद्या का वर्णन है । विजयसिद्धि चार प्रकार की होती है । द्वन्द्व युद्ध में विजय, चतुरङ्गिणी सेना के युद्ध में विजय, कूट युद्ध में विजय एवं दुर्ग युद्ध में विजय । इन चारों के चार मन्त्र बनते हैं । ऊपर में वर्णित २४वें श्लोक के अनुसार कूटयोजन से चार मन्त्र निम्न प्रकार के होते हैं ॥ २६ ॥

कामरूपता की प्राप्ति के लिये, यथाभिलषित रूप धारण करने के लिये एवं आत्मशक्ति की प्राप्ति के लिये एक ही मन्त्र है ॥ २७ ॥

एक जोड़ी खड़ाऊँ, जिसको धारण करके साधक इच्छित स्थान में क्षणमात्र में चला जाय; उस (खड़ाऊँ) की प्राप्ति के लिये एक ही मन्त्र है ॥ २८ ॥

जिस अञ्जन को आँखों में लगाकर साधक देवी को देख सकता है, गड़ा खजाना देख सकता है, अन्तरिक्ष स्थित या चारो देवों को देख सकता है, उस अञ्जन की प्राप्ति के लिये भी एक ही मन्त्र है ॥ २९ ॥

उस खड्ग की प्राप्ति, जिसके हाथ में आते ही शत्रु प्रणाम करके वशीभूत हो जाते हैं या भाग जाते हैं, उसके लिये भी एक ही मन्त्र है ॥ ३० ॥

वेताल-सिद्धि के लिये भी एक ही मन्त्र है । जिसके सिद्ध होने पर वेताल साधक को अपने कन्धों पर बिठाकर मनोवाञ्छित स्थानों में भ्रमण कराते हैं ॥ ३१ ॥

वेताल कई प्रकार के विग्रह वाले होते हैं । कोई विकृत मुख होते हैं, किसी का मुख टेढ़ा होता है तथा किसी का शरीर बड़ा भयङ्कर होता है ॥ ३२ ॥

ये सभी साधक के वश में हो जाते हैं । साधक के कहने मात्र से शत्रुओं को खा जाते हैं और साधक की आयुपर्यन्त उसके वश में नौकरों के समान रहते हैं ॥ ३३ ॥

वेतालों के समान पिशाचों की सिद्धि से भी शत्रुओं का संहार हो जाता है । ये पिशाच भयङ्कर आकृति-प्रकृति के होते हैं । ये असङ्ख्य हैं । ये क्रोधी और क्षुद्राशय होते हैं तथा आज्ञानुसार नौकर के समान कार्य करते हैं । इनके लिये भी एक ही मन्त्र है ॥ ३४-३५ ॥

वाञ्छितप्रदा यक्षिणियाँ ३६ प्रकार की होती हैं । ये सुन्दर, दो भुजावाली तथा विचित्र वस्त्र और आभूषण धरण किए हुए हैं ॥ ३६ ॥

ये परिवाररहित युवती सुगन्धित लेप लगाने वाली, साधकों को सभी अभीष्ट देने वाली होती हैं ॥ ३७ ॥

इन ३६ यक्षिणियों के पृथक्-पृथक् ३६ मन्त्र हैं । अब उनका वर्णन किया जायेगा । हे प्रिये ! आप सुनिये । सिद्ध होने पर ये सभी साधक के साथ सदैव रहती हैं ॥ ३८ ॥

चेटक ६४ प्रकार के होते हैं । उनके ६४ मन्त्र हैं । ये भी विविध रूप तथा आकार के होते हैं । सिद्ध होने पर साधक को इच्छित फल देते हैं ॥ ३९ ॥

माया असङ्ख्य होती हैं । इसकी सिद्धि के लिये एक ही मन्त्र होता है । माया विचित्र-विचित्र प्रकार वाली होती हैं ॥ ४० ॥

विद्याया नवमाणादिवर्णैः षड्भिरुदीरितैः ।

दशविद्याः प्रजायन्ते शृणु वक्ष्ये च ताः क्रमात् ॥ ४१ ॥

विद्या का स्वरूप—४१-७१ तक के ३१ श्लोकों में पूर्ववर्णित १११ मन्त्रों के स्वरूप का वर्णन है । विद्या के आद्य नव वर्णों के साथ छः वर्ण मिलाने से १० प्रकार के मन्त्र बनते हैं । उनका वर्णन क्रमशः किया जाता है । हे पार्वति ! आप सुनिये ॥ ४१ ॥

नित्येति विजयं देहीत्युक्त्वा सम्पुटयेत्ततः ।

विद्या सा विजयप्राप्त्यां चतुर्वर्षकादशाक्षराः ॥ ४२ ॥

विजय-प्राप्ति मन्त्र—‘नित्य विजयं देहि’ कहकर ‘मदद्रवे’ कहने से एकादश अक्षरों का मन्त्र बनता है जो चार प्रकार की विजय दिलाने वाला है । ये चार मन्त्र निम्नलिखित हैं—

१. नित्य विजयं देहि मदद्रवे ।
२. नित्य द्वन्द्वयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे ।
३. नित्य चतुरङ्गयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे ।
४. नित्य कूटयुद्धे विजयं देहि मदद्रवे ।

इनके सिद्ध होने पर चारों प्रकार की विजय मिलती है ॥ ४२ ॥

मदेति कामरूपं मे देहीतिपुटयेत्तथा ।

त्रयोदशाक्षरी विद्या कामरूपप्रदेरिता ॥ ४३ ॥

कामरूप-प्राप्ति मन्त्र—‘मद कामरूपं मे देहि’ के साथ ‘द्रवे नित्य’ लगाने से तेरह अक्षरों का निम्न मन्त्र बनता है—मद कामरूपं मे देहि द्रवे नित्य । सिद्ध होने पर कामरूप धारण करने की सिद्धि मिलती है ॥ ४३ ॥

नित्यदेपादुकां देहीत्युक्त्वा कुर्याच्च सम्पुटम् ।

द्वादशार्णा भवेद्विद्या सिद्धा दद्याच्च पादुके ॥ ४४ ॥

पादुका-प्राप्ति मन्त्र—‘नित्यदे पादुकां देहि’ के साथ ‘मदद्रवे’ लगाने से १२ अक्षरों का मन्त्र बनता है । जिसके सिद्ध होने पर पादुका प्राप्त होती है । मन्त्र—नित्यदे पादुकां देहि मदद्रवे ॥ ४४ ॥

तथा नित्यमदेत्युक्त्वा देह्यञ्जनमितीरयेत् ।

पूजयेत्तद्वयेनात्र द्वादशार्णा समीरिता ॥ ४५ ॥

अञ्जन-सिद्धि मन्त्र—‘द्रवे’ कहकर ‘नित्यमद’ कहें । तब ‘देह्यञ्जन द्रवे’ कहे । इस प्रकार बारह अक्षर का मन्त्र बनता है । इसके सिद्ध होने पर साधक को अञ्जन प्राप्त होता है । मन्त्र—द्रवे नित्यमद देह्यञ्जन द्रवे ॥ ४५ ॥

द्रवीत्येदेहिखड्गारमित्युक्त्वा पुटयेत्तथा ।

द्वादशार्णा भवेत् सिद्धा सत्या दद्यात्सुशोभनम् ॥ ४६ ॥

खड्ग-सिद्धि मन्त्र—‘द्रव नित्ये देहि खड्गं’ को ‘द्रव नित्ये’ से पुटित करने पर द्वादशाक्षर मन्त्र बनता है । सिद्ध होने पर साधक को खड्ग प्राप्त होता है । मन्त्र—द्रव नित्ये देहि खड्गं द्रव नित्ये ॥ ४६ ॥

नित्यद्रवेति वेतालान् देहीति पुटयेत्तथा ।

त्रयोदशाक्षरां विद्यां सिद्धां तान् दर्शयेत्तथा ॥ ४७ ॥

बेताल-सिद्धि—‘नित्य द्रवे वेतालान् देहि’ को ‘नित्य द्रवे’ से पुटित करने पर तेरह अक्षरों का मन्त्र बनता है । इस विद्या के सिद्ध होने पर बेताल वशीभूत होते हैं और साधक की इच्छा पूरी करते हैं । मन्त्र—नित्य द्रवे वेतालान् देहि नित्य द्रवे ॥ ४७ ॥

पिशाचान्मे प्रयच्छेति पूर्वं नित्यमद्रवे ।

पुटयेत्पूर्ववद्द्वाभ्यां विद्या सप्तदशाक्षरा ॥ ४८ ॥

पिशाच-सिद्धि—‘नित्यमद्रवे’ के बाद ‘पिशाचान्मे प्रयच्छ’ कहकर पूर्ववत् ‘नित्य-द्रवे’ से पुटित करने पर १७ अक्षरों का मन्त्र बनता है । इसके सिद्ध होने पर पिशाच सिद्ध होते हैं, जो साधक की सेवा में रहते हैं । मन्त्र—नित्यमद्रवे पिशाचान्मे प्रयच्छ नित्यद्रवे ।

षट्त्रिंशदुक्ता यक्षिण्यस्ताः सर्वा वाञ्छितप्रदाः ।

तासां नामानि विद्याश्च शृणु वक्ष्ये यथाविधि ॥ ४९ ॥

विचित्रा विभ्रमा हंसी भीषणी जनरञ्जिका ।

विशाला मदना रुद्धा कालकण्ठी महाभया ॥ ५० ॥

माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री मङ्गला वटवासिनी ।

मेखला सकला लक्ष्मीमालिनी विश्वनायिका ॥ ५१ ॥

सुलोचना सुशोभा च कामदा सुविलासिनी ।

कामेश्वरी नन्दिनी च स्वर्णरिखा मनोरमा ॥ ५२ ॥

प्रमोदा रागिणी सिद्धा पद्मिनी सरतिप्रिया ।

कल्याणदा कलादक्षा ततश्च सुरसुन्दरी ॥ ५३ ॥

इति षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्योऽभीष्टदायिकाः ।

यक्षिणीयों के नाम—४९-५३ तक के श्लोकों में ३६ यक्षिणियों के नामों का विवरण है । हे पार्वति ! पूर्वोक्त ३६ यक्षिणियाँ जो सर्वार्थ-सिद्धि देने में सक्षम हैं, उनके नामों और मन्त्रों का वर्णन यथाविधि किया जाता है । आप सुनिये ॥ ४९ ॥

१. विचित्रा २. विभ्रमा ३. हंसी ४. भीषणी ५. जनरञ्जिका ६. विशाला ७. मदना ८. रुद्धा ९. कालकण्ठी १०. महाभया ११. माहेन्द्री १२. शङ्खिनी १३. चान्द्री १४. मङ्गला १५. वटवासिनी १६. मेखला १७. सकला १८. लक्ष्मी १९. मालिनी २०. विश्वनायिका २१. सुलोचना २२. सुशोभा २३. कामदा २४. सविलासिनी २५. कामेश्वरी २६. नन्दिनी २७. स्वर्णरिखा २८. मनोरमा २९. प्रमोदा ३०. रागिणी ३१. सिद्धा ३२. पद्मिनी ३३. सरतिप्रिया ३४. कल्याणदा ३५. कलादक्षा ३६. सुरसुन्दरी ॥ ५०-५४ ॥

तासां विद्याः क्रमेणैव तद्बीजद्वयसम्पुटैः ॥ ५४ ॥

नित्यद्रवमदेत्यन्तैः षड्वर्णैः स्वोक्तनामभिः ।

विद्याः षट्त्रिंशदाख्यातास्ताः सिद्धा दद्युरीप्सितम् ॥ ५५ ॥

५४-५५ के दो श्लोकों में ३६ यक्षिणियों की विद्या-सिद्धि का वर्णन है । मूल विद्या के दो अक्षर ‘हीं श्री’ से ‘नित्यद्रवमद’ छः अक्षर और यक्षिणी के नाम को सम्पुटित करने से ३६ विद्यामन्त्र बनते हैं, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं ॥ ५४-५५ ॥

तासां विद्यार्णसङ्ख्यास्तु शृणु वक्ष्ये यथाक्रमम् ।

पञ्चमी पञ्चदशमी विंशतिश्च तथाऽन्तिमा ॥ ५६ ॥

चतस्रः पञ्चदशकास्तृतीया साऽष्टमी तथा ।
 त्रयोदशी चाष्टदशी द्वाविंशा द्वादशाक्षरा ॥ ५७ ॥
 सैकत्रिंशच्च तद्वत्प्युश्चतुर्दशसमन्विताः ।
 नवमी दशमी चैकविंशा तद्वदनन्तरम् ॥ ५८ ॥
 चतुर्विंशा पञ्चविंशा सप्तविंशा तदूर्ध्वगा ।
 त्रयस्त्रिंशा(धि)दिकास्त्रिंशस्त्रयोदशयुताः पराः ॥ ५९ ॥

विद्याक्षर सङ्ख्या—५६ से ५९ तक के चार श्लोकों में ३६ यक्षिणी विद्याओं के अक्षरों की सङ्ख्या बतलायी गयी है। पाँचवीं, १५वीं, २०वीं एवं ३६वीं—ये चार १५ वर्णा हैं। ३सरी, ८वीं, १३वीं, १८वीं, २२वीं एवं ३१वीं—ये छः १२ वर्णा हैं। ९वीं, १०वीं, २१वीं, २४वीं, २५वीं, २७वीं, २८वीं, ३३वीं, ३४वीं एवं ३५वीं—ये १० विद्यायें १४ वर्णों की हैं। शेष १६ विद्यायें अर्थात् पहली, दूसरी, ४थी, ६वीं, ७वीं, ११वीं, १२वीं, १४वीं, १६वीं, १७वीं, १९वीं, २३वीं, २६वीं, २९वीं, ३०वीं एवं ३२वीं—१३ वर्णों की हैं। सब मिलाकर कुल ३६ विद्यायें निम्न प्रकार की बनती हैं—

१. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद विचित्रे श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
२. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद विभ्रमे श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
३. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद हंसी श्रीं ह्रीं	= १२ अक्षर
४. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद भीषणी श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
५. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद जनरञ्जिके श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर
६. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद विशाले श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
७. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद मदने श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
८. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद रुद्धे श्रीं ह्रीं	= १२ अक्षर
९. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद कालकण्ठी श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
१०. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद महाभये श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
११. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद माहेन्द्री श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
१२. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद शङ्खिनी श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
१३. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद चान्द्री श्रीं ह्रीं	= १२ अक्षर
१४. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद मङ्गले श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
१५. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद वटवासिनी श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर
१६. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद मेखले श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
१७. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सकले श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
१८. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद लक्ष्मी श्रीं ह्रीं	= १२ अक्षर
१९. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद मालिनी श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
२०. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद विश्वनायिके श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर
२१. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सुलोचने श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
२२. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सुशोभे श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर

२३. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद कामदे श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
२४. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सविलासिनी श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर
२५. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद कामेश्वरी श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
२६. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद नन्दिनी श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
२७. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद स्वणरिखे श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
२८. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद मनोरमे श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
२९. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद प्रमोदे श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
३०. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद रागिणि श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
३१. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सिद्धे श्रीं ह्रीं	= १२ अक्षर
३२. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद पद्मिनी श्रीं ह्रीं	= १३ अक्षर
३३. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सरतिप्रिये श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर
३४. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद कल्याणदे श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
३५. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद कलादक्षे श्रीं ह्रीं	= १४ अक्षर
३६. ह्रीं श्रीं नित्य द्रवे मद सुरसुन्दरी श्रीं ह्रीं	= १५ अक्षर

विशेष—मूल के अनुसार अक्षरों की संख्या में भिन्नता है; जैसे—२४वीं यक्षिणी १५ अक्षरों की है। किन्तु मूल पाठ में इसे नहीं दर्शाया गया है ॥ ५६-५९ ॥

चेटकानां चतुःषष्टिं तन्मात्रां च वदामि ते ।

शृणु शुद्ध्यास्तु ते नित्यं साधयेयुः समीहितम् ॥ ६० ॥

विभ्रमो वाहको वीरो विकर्षः क्रोकरः कविः ।

सिंहनादो महानादः सुग्रीवो मर्कटः शठः ॥ ६१ ॥

बिडालाक्षो बिडालास्यः कुमारः खचरो भवः ।

मयूरो मङ्गलो भीमो द्वीपिवक्त्रः षडाननः ॥ ६२ ॥

मातङ्गश्च निशाचारी विषग्राही वृकोदरः ।

सैरिभास्यो गजमुखः पशुवक्त्रो गजाननः ॥ ६३ ॥

क्षोभको मणिभद्रश्च क्रीडकः सिंहवक्त्रकः ।

श्येनास्यः कङ्कवदनः काकास्यो हयवक्त्रकः ॥ ६४ ॥

महोदरः स्थूलशिरा विकृतास्या वराननः ।

चपलः कुक्कुटास्यश्च मायावी मदनालसः ॥ ६५ ॥

मनोहरो दीर्घजङ्घः स्थूलदन्तो दशाननः ।

सुमुखः पीडितः क्रुद्धो वराहास्यः सटामुखः ॥ ६६ ॥

कपटः कौतुकी कालः किङ्करः कितवः खलः ।

भक्षको भयदः सिद्धः सर्वगश्चेति कीर्तिताः ॥ ६७ ॥

चेटकों के नाम—६०-६७ तक के ८ श्लोकों में ६४ चेटकों के नाम तथा उनके मन्त्रों का वर्णन है। चेटक ६४ होते हैं। अब उनके नामों का वर्णन किया जाता है। उनकी नित्य साधना समीहित रूप से की जाती है ॥ ६० ॥

विभ्रम, वाहक, वीर, विकर्ष, क्रोकर, कवि, सिंहनाद, महानाद, सुग्रीव, मर्कट, और शठ—कुल ग्यारह नाम श्लोक ६१ में हैं ॥ ६१ ॥

बिडालाक्षो, बिडालास्य, कुमार, खेचर, भव, मयूर, मङ्गल, भीम, द्वीपिवक्त्र और षडानन—कुल दश नाम श्लोकाङ्क ६२ में हैं ॥ ६२ ॥

मातङ्ग, निशाचारी, विषग्राही, वृकोदर, सैरिभास्य, गजमुख, पशुवक्त्र और गजानन—कुल आठ नाम श्लोकाङ्क ६३ में हैं ॥ ६३ ॥

क्षोभक, मणिभद्र, क्रीडक, सिंहवक्त्रक, श्येनास्य, कङ्कवदन, काकास्य और हयवक्त्रक—कुल आठ नाम श्लोकाङ्क ६४ में हैं । महोदर, स्थूलशिरा, विकृतास्य, वरानन, चपल, कुक्कुटास्य, मायावी और मदनालस—कुल आठ नाम श्लोकाङ्क ६५ में हैं ।

मनोहर, दीर्घजङ्घ, स्थूलदन्त, दशानन, सुमुख, पीडित, क्रुद्ध, वराहास्य और सटामुख—कुल नौ नाम श्लोक ६६ में हैं ॥ ६४-६६ ॥

कपट, कौतुकी, काल, किङ्कर, कितव, खल, भक्षक, भयद, सिद्ध और सर्वग—कुल दश नाम श्लोक ६७ में हैं । इस प्रकार कुल ६४ चेटक हुए ॥ ६७ ॥

बीजद्वयपुटान्तस्थैर्मदनित्य(१)द्रवेयुतैः ।

नामभिस्तैर्द्वितीयान्तैर्देहीतिपदसंयुतैः ॥ ६८ ॥

एवं मन्त्राश्चतुःषष्टिः क्रमादुक्ता महेश्वरि ! ।

चेटक मन्त्र—उपरोक्त डेढ़ श्लोकों में चेटकों के मन्त्र-निर्माण की विधि का वर्णन है । इसके अनुसार 'हीं श्री' के बाद 'मद नित्य द्रवे' और इसके बाद नाम फिर 'श्रीं हीं' लगाने से ६४ मन्त्र बनते हैं ॥ ६८-६९ ॥

तेषां सङ्ख्यामपि तथा शृणु वक्ष्ये यथाविधि ॥ ६९ ॥

चतुर्दशाक्षरास्तेषु नव मन्त्राः समीरिताः ।

तथा पञ्चदशार्णाः स्युः षड्विंशतिरितीरिताः ॥ ७० ॥

षोडशार्णास्तु मनवः पञ्चविंशतिरीरिताः ।

तथा सप्तदशार्णाश्च चत्वारो व्याकुलक्रमात् ॥ ७१ ॥

मन्त्राक्षरों की सङ्ख्या—६९-७१ तक के ढाई श्लोकों में मन्त्राक्षरों की सङ्ख्या बतलायी गयी है । हे महेश्वरि ! अब उन ६४ मन्त्रों के अक्षरों की सङ्ख्या बतायी जाती है, आप सुनिये । १४ अक्षरों के मन्त्र ९, १५ अक्षरों के मन्त्र २६, १६ अक्षरों के मन्त्र २५ और १७ अक्षरों के मन्त्र ४ हैं । इस प्रकार कुल ६४ मन्त्रों के अक्षरों की सङ्ख्या व्याकुलित क्रम से है—

- ६४ मन्त्र—
१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे विभ्रमं देहि श्रीं हीं = १५ वर्ण
 २. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे वाहकं देहि श्रीं हीं = १५ वर्ण
 ३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे वीरं देहि श्रीं हीं = १४ वर्ण
 ४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे विकर्ष देहि श्रीं हीं = १५ वर्ण
 ५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे क्रोकरं देहि श्रीं हीं = १५ वर्ण

६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कविं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सिंहनादं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे महानादं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सुग्रीवं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
१०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मर्कटं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
११. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे शठं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
१२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे बिडालाक्षं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
१३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे बिडालास्यं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
१४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कुमारं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
१५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे खेचरं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
१६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे भवं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
१७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मयूरं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
१८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मङ्गलं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
१९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे भीमं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
२०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे द्वीपिवक्त्रं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे षडाननं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मातङ्गं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
२३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे निशाचारिणं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
२४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे विषग्राहिणं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
२५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे वृकोदरं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सैरिभास्यं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे गजमुखं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे पशुवक्त्रं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
२९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे गजाननं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
३०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे क्षोभकं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
३१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मणिभद्रं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
३२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे क्रीडकं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
३३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सिंहवक्त्रकं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
३४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे श्येनास्यं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
३५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कङ्कवदनं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
३६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे काकास्यं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
३७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे हयवक्त्रं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
३८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे महोदरं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
३९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे स्थूलशिरसं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
४०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे विकृतास्यं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे वराननं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे चपलं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण

४३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कुक्कुटास्यं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मायाविनं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मदनालसं देहि श्रीं हीं	= १७ वर्ण
४६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे मनोहरं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे दीर्घजङ्घं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे स्थूलदन्तं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
४९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे दशाननं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
५०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सुमुखं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
५१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे पीडितं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
५२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे क्रुद्धं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
५३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे वराहास्य देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
५४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सटामुखं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
५५. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कपटं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
५६. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कौतुकिनं देहि श्रीं हीं	= १६ वर्ण
५७. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कालं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
५८. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे किङ्करं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
५९. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे कितवं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
६०. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे खलं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
६१. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे भक्षकं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
६२. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे भयदं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण
६३. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सिद्धं देहि श्रीं हीं	= १४ वर्ण
६४. हीं श्रीं मद नित्य द्रवे सर्वगं देहि श्रीं हीं	= १५ वर्ण

विशेष—मूलपाठ के अनुसार चेटकों की मन्त्राक्षर संख्या भिन्न है । जैसे—पन्द्रह अक्षरों की मन्त्रसंख्या पूर्ण नहीं है । इत्यादि ॥ ६९-७१ ॥

विद्याक्षरैरनावृत्तान्यक्षराणि चतुर्दश ।

सस्वरैस्तैर्भवेत्सङ्ख्या चतुर्विंशच्छतद्वयम् ॥ ७२ ॥

तैर्यन्त्राणि च सप्त स्युस्तेषु प्रोक्ताः क्रमाद्यजेत् ।

देवताः सप्तवारेषु भास्करादिषु भक्तितः ॥ ७३ ॥

वाराख्यां सप्तमीयुक्तामिष्टं देहीति चालिखेत् ।

यन्त्रस्य मध्ये मायास्थं तत्र सिद्धीश्च पूजयेत् ॥ ७४ ॥

स्वर-विकृत मूल विद्याक्षरों से सात यन्त्रों का निर्माण—७२ से ९५ तक के २४ श्लोकों में पूर्वोक्त (इस पटल में) १११ मन्त्रों की सिद्धि के लिये सात दिनों के अनुसार स्वर-विकृत मूल विद्याक्षरों से ७ यन्त्र-निर्माण, उनके पूजन के स्थान, देवताओं के प्रत्यक्षीकरण एवं फल आदि का वर्णन है । भगवती नीलपताका के १७ अक्षरों वाले मन्त्र को अनावृत्त करने पर १४ अक्षर—ह र फ स क अ ल व न त य म द व प्राप्त होते हैं । उनमें सोलह स्वरों के गुणन से $१४ \times १६ = २२४$ अक्षर बनते हैं ॥ ७२ ॥

इनमें-से बत्तीस-बत्तीस अक्षरों के ७ यन्त्र बनते हैं (२२४ ÷ ७ = ३२) । इन सात यन्त्रों में-से प्रथम यन्त्र को रविवार में, द्वितीय यन्त्र को सोमवार में, तृतीय यन्त्र को मङ्गलवार में, चतुर्थ यन्त्र को बुधवार में, पञ्चम यन्त्र को गुरुवार में, षष्ठ यन्त्र को शुक्रवार में और सप्तम यन्त्र को शनिवार में भक्तिपूर्वक पूजन करे ॥ ७३ ॥

सप्तमी शब्दरूप वार के साथ अर्थात् रविवारे सोमवारे ... शनिवारे तथा इष्ट कामना लिखे, इसके बाद 'देहि' यन्त्र के मध्य में लिखे, साथ ही 'ही' के मध्य में ऊपर वर्णित दश सिद्धियों में जो इष्ट हो उसकी पूजा करे ॥ ७४ ॥

वृत्तयोर्नवयोनिं तु कृत्वा बाह्येऽष्टकोणकम् ।

बहिः कलाब्जभूपद्मयुगं कुर्याद्यथाविधि ॥ ७५ ॥

विलिख्य तेषु क्रमशो वर्णान् द्वात्रिंशदालिखेत् ।

दलेषु कोणेषु तथा वृत्तमध्यत्रये पुनः ॥ ७६ ॥

मातृकामकथाद्यां वै विलिखेदान्तरक्रमात् ।

तस्य कोणान्तरालेषु हलक्षणान् क्रमाल्लिखेत् ॥ ७७ ॥

अग्रात्प्रदक्षिणं त्वेवं सप्त यन्त्राणि तैर्भवेत् ।

सिद्धीनां यक्षिणीनां च चेटकानां तथैकशः ॥ ७८ ॥

चेटकानां विशेषोऽयं मध्येऽष्टच्छदमम्बुजम् ।

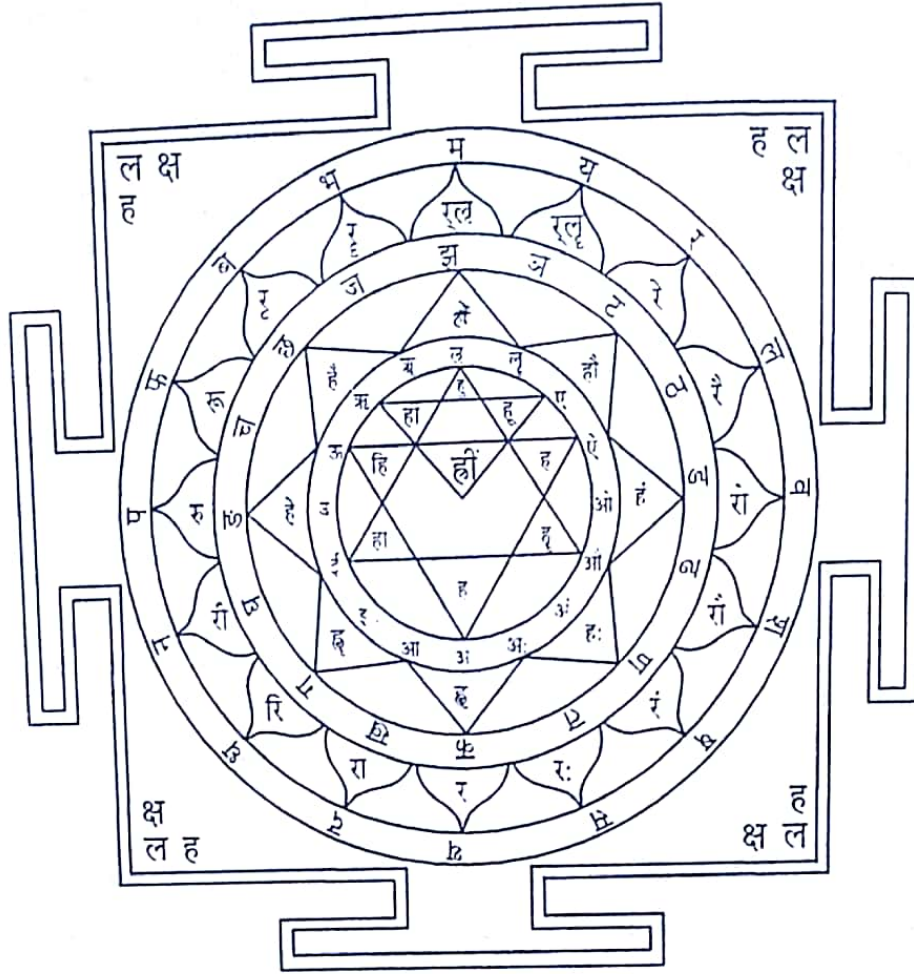
तेषामुक्तक्रमेणैव साधनानि फलानि वै ॥ ७९ ॥

यन्त्र-रचना—वृत्त में नवकोण बनाकर, वृत्त के बाहर अष्टकोण बनावे । इसके बाहर षोडशदल पद्म बनावे । इसके बाहर चार द्वारों वाले दो चतुस्र बनावे ॥ ७५ ॥

यन्त्र बनाने के बाद नवयोनि चक्र वाले अष्टकोणों में स्वर-विकृत २२४ अक्षरों में-से प्रथम ८ अक्षरों को लिखे । इसके बाद बाहर वाले अष्टकोणों में ९ से १६ तक के अक्षर लिखे । षोडश दलों में १७ से ३२ तक के अक्षरों को लिखे । इसके बाद नवयोनि चक्र और अष्टकोण चक्र के अन्तराल में सोलह स्वर अ आ.... अं अः लिखे । इसके बाद अष्टकोण और षोडशदल के बीच में क ख ग ... ण त तक के १६ अक्षरों को लिखे । इसके बाद षोडशदल और भूपुर के मध्य में थ द ध श ष स सोलह अक्षर लिखे । भूपुर के चारो कोणों में 'ह ल क्ष' तीन अक्षर लिखे, यह प्रथम यन्त्र हुआ । २२४ अक्षरों में-से ३२ अक्षर से प्रथम यन्त्र बना । इसके बाद वाले ३२ अक्षरों से दूसरा, इसके बाद वाले ३२ अक्षरों से तीसरा, इसके बाद वाले ३२ अक्षरों से चौथा, इसके बाद वाले ३२ अक्षरों से पाँचवाँ, इसके बाद वाले ३२ अक्षरों से छठा और इसके बाद वाले अन्तिम ३२ अक्षरों से सातवाँ यन्त्र बनेगा । १० सिद्धियों, ३६ यक्षिणियों एवं ६४ चेटकों को इन यन्त्रों से एक-एक करके सिद्ध किया जाता है ॥ ७६-७८ ॥

चेटकों की सिद्धि करने में विशेषता यह है कि मध्य नवयोनि चक्र के बाहरी आठ कोणों में अष्टदल कमल बनाकर प्रत्येक में आठ आठ को लिखकर पूजन करने से सिद्धि मिलती है ॥ ७९ ॥

प्रथम रविवार पूजन यन्त्र



प्रथम यन्त्र के मध्य स्थित त्रिकोण में 'हीं' के उदर में लिखे 'रविवारे इष्टं देहि' । 'इष्ट' में ऊपर वर्णित १०८ सिद्धियों में-से कोई एक लिखे । मध्य स्थित नवयोनि चक्र के बाहरी आठ कोणों में स्वरविकृत २२४ अक्षरों के प्रारम्भ के १ से ८ तक के अक्षर—ह हा हि ही हु हू हृ ह्र ह्र हे है हो हौ हं हः लिखे । उसके बाहर दो वृत्तों के मध्य में १६ स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं अः लिखे । उसके बाद अष्टकोण में स्वरविकृत २२४ अक्षरों में-से आठ—ह्र ह्र हे है हो हौ हं हः लिखे । उसके बाद वृत्तद्वय के मध्य में १६ अक्षर—क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त लिखे । इसके बाद षोडशदल कमल में स्वरविकृत २२४ अक्षरों में-से १७ से ३२ तक के १६ अक्षर—र रा रि री रु रू रृ रलृ रलृ रे रै रो रौ रं रः लिखे । बाहरी वृत्तद्वय के अन्तराल में थ से लेकर स तक के १६ अक्षर—थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स लिखे । चतुरस्र भूपुर के चारो कोणों में—ह ल क्ष लिखे ।

प्रथम यन्त्र में ३२ स्वरविकृत अक्षर हैं—

ह हा हि ही हु हू हृ ह्र ह्र हे है हो हौ हं हः = १६

र रा रि री रु रू रृ रलृ रलृ रे रै रो रौ रं रः = १६

द्वितीय सोमवार पूजन यन्त्र—प्रथम यन्त्र के समान ही द्वितीय यन्त्र बनेगा ।

मध्यस्थ नवयोन्यात्मक चक्र के आठ कोणों में तथा उसके बाहर के अष्टकोणों में और उसके बाहर षोडशदल में जो $८+८+१६ = ३२$ अक्षर भरे जायेंगे, वे निम्नलिखित हैं—

फ फा फि फी फु फू फृ फृ फलू फलू फे फै फो फौ फं फः = १६

स सा सि सी सु सृ स्तृ स्तृ से सै सो सौ सं सः = १६

तृतीय मङ्गलवार पूजन यन्त्र—प्रथम एवं द्वितीय यन्त्र के समान ही तृतीय यन्त्र भी बनेगा। नवयोन्यात्मक चक्र के बाहरी आठ कोणों में, उसके बाहर के आठ कोणों में तथा षोडशदल में जो $८+८+१६ = ३२$ अक्षर अङ्कित होंगे, वे निम्नलिखित हैं—

क का कि की कु कू कृ कृ कलू कलू के कै को कौ कं कः = १६

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः = १६

चतुर्थ बुधवार पूजन यन्त्र—प्रथम यन्त्र के समान ही चतुर्थ यन्त्र भी बनेगा। मध्यस्थ नवयोन्यात्मक चक्र के बाह्य आठ कोणों में ८ अक्षर, उसके बाहर के आठ कोणों में ८ अक्षर और षोडशदल में जो १६ अक्षर भरे जायेंगे, वे कुल ३२ अक्षर निम्नलिखित हैं—

ल ला लि ली लु लू लृ लृ ललू ललू ले लै लो लौ लं लः = १६

व वा वि वी वु वू वृ वृ वलू वलू वे वै वो वौ वं वः = १६

पञ्चम गुरुवार पूजन यन्त्र—प्रथम यन्त्र के समान ही पञ्चम यन्त्र भी बनेगा। मध्यस्थ नव योन्यात्मक चक्र के बाह्य आठ कोणों में ८ अक्षर, उसके बाहर अष्ट कोणों में ८ अक्षर और षोडशदल में जो १६ अक्षर अङ्कित होंगे, वे कुल ३२ अक्षर निम्नलिखित हैं—

न ना नि नी नु नू नृ नृ नलू नलू ने नै नो नौ नं नः = १६

त ता ति ती तु तू तृ तृ तलू तलू ते तै तो तौ तं तः = १६

षष्ठ शुक्रवार पूजन यन्त्र—प्रथम यन्त्र के समान ही षष्ठ यन्त्र भी बनेगा। मध्यस्थ नवयोन्यात्मक चक्र के बाह्य आठ कोणों में ८ अक्षर, उसके बाहर आठ कोणों में ८ अक्षर और षोडशदल में जो १६ अक्षर अङ्कित होंगे, वे निम्नलिखित हैं—

य या यि यी यु यू यृ यृ यलू यलू ये यै यो यौ यं यः = १६

म मा मि मी मु मू मृ मृ मलू मलू मे मै मो मौ मं मः = १६

सप्तम शनिवार पूजन यन्त्र—प्रथम यन्त्र के समान ही सप्तम यन्त्र भी बनेगा। मध्यस्थ नवयोन्यात्मक चक्र के बाह्य अष्ट त्रिकोणों में ८ अक्षर, उसके बाहर के आठ त्रिकोणों में ८ अक्षर और षोडशदल में जो १६ अक्षर अङ्कित होंगे वे निम्नलिखित हैं—

द दा दि दी दु दू दृ दृ दलू दलू दे दै दो दौ दं दः = १६

व वा वि वी वु वू वृ वृ वलू वलू वे वै वो वौ वं वः = १६

प्रयोगान् शृणु देवेशि! यैः सिद्धैर्मत्समो भुवि।

पूज्यते सर्वलोकैश्च सर्वतः सर्वदापि च ॥ ८० ॥

यन्त्रों के प्रयोग—हे देवेशि! अब इन यन्त्रों के प्रयोग सुनिये, जिन्हें सिद्ध करके साधक मेरे (शिव) के समान हो जाता है और सब लोकों में सर्वत्र सदैव पूज्य हो जाता है।

अरण्यवटमूले च पर्वताग्रे गुहासु च।

उद्यानमध्ये कान्तारे मातृपादपमूलतः ॥ ८१ ॥

सिन्धुतीरवने चैता यक्षिणीः साधयेत्त्रिशः ।

एकैकस्मिन् वर्णलक्षं जपेदुक्तविधानतः ॥ ८२ ॥

यक्षिणी साधना का स्थल—८१-८२ तक के दो श्लोकों में इनकी साधना का स्थान बतलाया गया है । १. जङ्गली वटवृक्ष के मूल के समीप, २. पर्वत शिखर पर, ३. पहाड़ी गुफा में, ४. बगीचे के मनोरम स्थान में, ५. नदी के तटवर्ती जङ्गल में, ६. लिसोड़ा के पेड़ के मूल के समीप, ७. करञ्जवृक्ष मूल के समीप, ८. रुद्राक्षवृक्ष मूल के समीप, ९. नीमवृक्ष मूल के समीप, १०. अश्वत्थवृक्ष मूल के समीप, ११. कदम्बवृक्ष मूल के समीप तथा १२. बेलवृक्ष मूल के समीप—इस प्रकार कुल १२ स्थानों में यक्षिणियों की सिद्धि होती है । छत्तीस यक्षिणियों में-से तीन-तीन की सिद्धि प्रत्येक स्थान में होती है । स्पष्टतः विचित्रा, विभ्रमा, हंसी—तीन की साधना वटवृक्ष मूल के समीप; भीषणी, जनरञ्जिका, विशाला—तीन की साधना पर्वत शिखर पर; मदना, तुष्टा, कालकण्ठी—तीन की साधना गुफा में; महामाया, माहेन्द्री, शङ्खिनी की साधना बगीचे के मनोरम स्थान में; चान्द्रि, मङ्गला, वटवासिनी की साधना नदी के तटवर्ती जङ्गल में; मेखला, सकला, लक्ष्मी की साधना लिसोड़ा-वृक्ष मूल में; मालिनी, विश्वनायिका, सुलोचना की साधना करञ्जवृक्ष मूल में; शोभा, कामदा, विलासिनी की साधना रुद्राक्षवृक्ष मूल में; मनोहरा, प्रमोदा, रागिणि की साधना पीपलवृक्ष मूल में; सिद्धा, पद्मिनी, रतिप्रिया की साधना कदम्बवृक्ष मूल में और कल्याणदा, कलादक्षा, सुरसुन्दरी की साधना बिल्ववृक्ष के मूल में करनी चाहिये । सिद्धि के लिये प्रत्येक के मन्त्र का जप, जितनी मन्त्राक्षरी सङ्ख्या है उतने लाख करना चाहिये । ३६ यक्षिणियों के मन्त्राक्षरों की सङ्ख्या ऊपर लिखी जा चुकी है, उसी के अनुरूप जप करे ॥ ८१-८२ ॥

तद्दशांशं तर्पणं च होमं कुर्यात् प्रसूनकैः ।

कदम्बबन्धूकजयाहयमारैश्च लोहितैः ॥ ८३ ॥

ततः प्रीताः समागत्य प्रत्यक्षा वाञ्छितप्रदाः ।

सुवर्णानि च वासांसि भूषणानि फलानि च ॥ ८४ ॥

आस्वाद्यानि च पेयानि भोज्यानि विविधानि च ।

आलेपनानि माल्यानि दद्यात्तु राजीवितावधि ॥ ८५ ॥

जप का दशांश हवन तथा हवन का दशांश तर्पण करना चाहिये । हवन के लिये कदम्ब, बन्धूक, उड़हूल, लाल कनैल का फूल उत्तम माना गया है । इससे यक्षिणी प्रेमाबद्ध होकर साधक के समीप उपस्थित होती हैं तथा मनोवाञ्छित वस्तुएँ देती हैं । वस्तुओं में स्वर्ण, वस्त्र, गहने, फल आदि होते हैं । स्वादिष्ट भोजन, पेय, विविध व्यञ्जन, आलेप, माला आदि भी आजीवन देती हैं ॥ ८३-८५ ॥

आयाते सर्वदा ग्राह्यं प्रत्यक्षा देहि वाञ्छितम् ।

इत्युक्त्वा नित्यशस्तास्तु पूजयेच्च जपेत्तथा ॥ ८६ ॥

अष्टोत्तरसहस्रं तु तां तां विद्यामनन्यधीः ।

एवं ताः सर्वयक्षिण्यः फलं दद्याद्यथेप्सितम् ॥ ८७ ॥

यक्षिणी के प्रत्यक्ष होने पर ही साधक को वाञ्छित वस्तु ग्रहण करनी चाहिये । साधक को 'प्रत्यक्षं देहि वाञ्छितम्'—यह कहकर उसकी नित्य पूजा करके जप तथा चाहिये ॥ ८६ ॥

प्रत्येक यक्षिणी के मन्त्र का जप १००८ बार करना चाहिये । तब सब यक्षिणियाँ प्रसन्न होकर साधक को अभीष्ट फल देती हैं ॥ ८७ ॥

चेटकानान्तु सर्वेषां तेषूक्तेषु क्रमेण वै ।
 एकस्मिन् पञ्च पञ्च स्युः सिद्धाः सिन्धुतटे नव ॥ ८८ ॥
 तेषां च वर्णलक्षन्तु जपमुक्तविधानतः ।
 मौनं दिनेषु सततं कुर्यात् सिद्धयै न चालयेत् ॥ ८९ ॥
 मध्यरात्रे सदा होमं तर्पणं च समीरितम् ।
 जपेद्दिवानिशं प्रोक्तं सर्वेषामपि साधने ॥ ९० ॥
 चेटकास्ते समागत्य मध्यरात्रेऽतिभीषणाः ।
 क्षोभयुरमुं क्षोभं न चेदेत्यथ तत्पुरः ॥ ९१ ॥
 प्रत्यक्षाः किं तवेष्टं तत् करोमिति वदेन्निशि ।
 प्रत्येकं ते तथेत्युक्ता न मां मुञ्चत इत्यपि ॥ ९२ ॥
 नित्यशस्तान् जपार्चाभिरुपासीताचरेत्युनः ।
 (स्मृ)सते तमेत्य सन्दिष्टं साधयेयुः समीहितम् ॥ ९३ ॥
 शत्रूणां समरे भङ्गं प्रहारमहिते जने ।
 कुर्वन्ति प्रार्थितार्थानां प्रदानं च दिवाऽनिशम् ॥ ९४ ॥
 आनयेयुश्च वनिता वाञ्छितांस्तत्क्षणात् ध्रुवम् ।
 निश्चलीकुर्वते मत्तं दन्तिनं वा हयं नरम् ॥ ९५ ॥

चेटक साधना का स्थल—८८-९५ तक के श्लोकों में ६४ चेटकों के साधना-स्थल का विधान एवं फल का वर्णन है । चेटकों की साधना उपर्युक्त बारह स्थानों में करनी चाहिये । उन बारह स्थानों में-से ११ स्थानों में पाँच-पाँच चेटकों की साधना करनी चाहिये । इस प्रकार $५ \times ११ = ५५$ चेटकों की साधना होती है । बारहवें स्थान अर्थात् सागर तट पर शेष नौ की साधना करनी चाहिये । इनके मन्त्राक्षरों की सङ्ख्या ऊपर बतायी जा चुकी है । मन्त्र में जितने अक्षर हैं, उतने लाख जप करना चाहिये । जप-काल दिन में मौन रहे तथा निरन्तर साधना करे । जब तक सिद्धि न मिले तब तक साधक विचलित न हो ॥ ८८-८९ ॥

अर्द्धरात्रि में सम्यक् रीति से हवन एवं तर्पण करना चाहिये । सभी साधनों से रात-दिन जप करना चाहिये । मध्य रात्रि में चेटक भयङ्कर रूप से आते हैं तथा हृदय में भय उत्पन्न करते हैं । वे साधक एवं गाँव तथा नगर को क्षुब्ध कर देते हैं ॥ ९०-९१ ॥

साधक यदि निडर होकर साधनारत रहता है तो साधक के सामने प्रकट होकर कहते हैं—तुम्हारी क्या इच्छा है? मैं इस रात्रि में पूरी कर दूँगा । साधक को प्रत्येक से कहना चाहिये कि मेरा साथ मत छोड़िये अर्थात् मेरे साथ सदैव रहिये । उनके मन्त्रों का जप एवं

अर्चन नित्यशः करते रहना चाहिये । उपासना करते रहनी चाहिये । अपनी इच्छानुसार प्रोक्त क्रम से एक-एक कर चेटकों की साधना करनी चाहिये । सिद्ध होने पर चेटक साधक इच्छित स्त्री की प्राप्ति करा देता है तथा मतवाले हाथी, घोड़े और मनुष्यों को निश्चल कर देता है ।

नित्याषोडशके सिद्धे देवर्षिपितृराक्षसैः ।
 पिशाचैरुरगैः सिद्धैः किन्नरैरप्सरोगणैः ॥ ९६ ॥
 मरुद्भिर्वसुभिः सप्तऋषिभिर्यक्षदानवैः ।
 रुद्रैरेकादशविधैः साध्यैश्च नवभिर्ग्रहैः ॥ ९७ ॥
 द्वादशाकैर्लोकपालैस्तथाऽन्यैरपि दैवतैः ।
 राजभिर्वनिताभिश्च नरैरन्यैर्मृगैस्तथा ॥ ९८ ॥
 पूज्यते सर्वदा सिद्धसमीहितसुखास्पदः ।
 हृष्टाशयो वदान्यश्च दयावान् सुमुखः क्षमी ॥ ९९ ॥
 पूर्णाशयः सदानन्दो निरपेक्षफलान्वितः ।
 धनी भोक्ताऽपरद्वेषी प्रेमभूरावयोर्भवेत् ॥ १०० ॥

सिद्धि के लक्षण—९६-१०० तक के श्लोकों में सोलह नित्याओं की सिद्धि के लक्षण का वर्णन है । षोडश नित्याओं के सिद्ध होने पर देवर्षि, पितर, राक्षस, पिशाच, नाग, सिद्ध, किन्नर, अप्सरागण, मरुतगण, वसु, सप्तर्षि, यक्ष, दानव, एकादश रुद्र, साध्य, नवग्रह, द्वादश आदित्य, लोकपाल तथा अन्य देवता, राजा-रानी, मनुष्य, मृग सभी साधक की पूजा करते हैं अर्थात् सम्मान देते हैं । साधक सुख का अनुभव करता है । वह प्रफुल्ल हृदय, मधुर-भाषी, दयावान्, क्षमावान्, पूर्णाशय, सदा आनन्दितचित्त, फलप्राप्ति की चिन्ता से विहीन, धनी, भोक्ता, निर्वैर एवं सभी के लिये स्नेहिल व्यवहार करने वाला हो जाता है ॥ ९६-१०० ॥

जिह्वातत्त्वमयी व्याप्तिरिति सम्यक् समीरिता ।

अस्या निष्फलनाच्चित्ते तत्तत्त्वं स्वात्मसात्कृतम् ॥ १०१ ॥

॥ इति श्रीषोडशनित्यातन्त्रेषु श्रीकादिमते सप्तदशं
 पटलं परिपूर्णं परामृष्टम् ॥ १७ ॥



श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जिह्वातत्त्वमयी व्याप्ति का सम्यक् रूप से चिन्तन करके जो अपने चित्त में धारण करता है वह इस तत्त्व को आत्मसात् कर लेता है ॥ १०१ ॥

॥ तन्त्रराजतन्त्र की साधनात्मक हिन्दी व्याख्या में सत्रहवें पटल
 की हिन्दी पूर्ण हुई ॥ १७ ॥

